Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 14 ~ Issue 5 (May 2026) pp: 75-79
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

छठी कक्षा के विद्यार्थियों में हिंदी भाषा दक्षता का लैंगिक तुलनात्मक अध्ययन

पूनम

छात्रा, गवर्नमेंट स्टेट कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पटियाला

सारांश (ABSTRACT)

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य छठी कक्षा के विद्यार्थियों में हिंदी भाषा दक्षता का अध्ययन करना तथा बालक एवं बालिकाओं के मध्य तुलनात्मक विश्लेषण करना था। अध्ययन हेतु 200 विद्यार्थियों (100 बालक एवं 100 बालिकाएँ) का चयन किया गया। अध्ययन में हिंदी भाषा दक्षता परीक्षण का प्रयोग किया गया, जिसमें 100 अंकों की व्याकरण आधारित परीक्षा आयोजित की गई। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण माध्य, माध्यिका, बहुलक, मानक विचलन तथा t-परीक्षण द्वारा किया गया। अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ कि बालकों एवं बालिकाओं की हिंदी भाषा दक्षता में कोई सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

मुख्य शब्द (Keywords): हिंदी भाषा दक्षता, बालक, बालिकाएँ, तुलनात्मक अध्ययन, t-परीक्षण

*Received 06 May., 2026; **R**evised 14 May., 2026; **A**ccepted 16 May., 2026 © The author(s) 2026.*
P**ublished with open access at **www.questjournals.org

I. प्रस्तावना (INTRODUCTION)

भाषा मानव जीवन का महत्वपूर्ण आधार है। यह विचारों के आदान-प्रदान का प्रमुख माध्यम होने के साथ-साथ विद्यार्थियों के बौद्धिक, सामाजिक एवं भावनात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हिंदी भाषा भारतीय शिक्षा प्रणाली का एक महत्वपूर्ण अंग है तथा विद्यालय स्तर पर इसकी दक्षता विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है।

वर्तमान समय में भाषा दक्षता को लेकर विभिन्न शोध किए गए हैं, जिनमें लिंग के आधार पर अंतर के भिन्न-भिन्न परिणाम प्राप्त हुए हैं। कुछ अध्ययनों में बालिकाओं का प्रदर्शन बेहतर पाया गया, जबकि कुछ अध्ययनों में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। इसी संदर्भ में प्रस्तुत अध्ययन किया गया है।

अध्ययन की आवश्यकता (Need of the Study)

विद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों की हिंदी भाषा दक्षता का अध्ययन आवश्यक है, क्योंकि भाषा कौशल विद्यार्थियों की शैक्षिक सफलता का आधार है। यह अध्ययन बालक एवं बालिकाओं की भाषा दक्षता के तुलनात्मक विश्लेषण में सहायक होगा तथा शिक्षकों को शिक्षण विधियों में सुधार हेतु दिशा प्रदान करेगा।

समस्या का कथन (Statement of the Problem)

"छठी कक्षा के बालक एवं बालिकाओं की हिंदी भाषा दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन"

II. संबंधित साहित्य की समीक्षा (REVIEW OF RELATED LITERATURE)

वर्मा, डॉ. राकेश (2016) ने अपने अध्ययन "हिन्दी भाषा शिक्षण में शिक्षण विधियों का प्रभाव" में यह विश्लेषण किया कि पारंपरिक और नवोन्मेषी शिक्षण विधियाँ विद्यार्थियों की भाषा-अभिव्यक्ति पर किस प्रकार प्रभाव डालती हैं। शोध में यह पाया गया कि समूह चर्चा, संवादात्मक शिक्षण और प्रोजेक्ट आधारित गतिविधियाँ विद्यार्थियों की लिखित और मौखिक अभिव्यक्ति कौशल को अधिक प्रभावी बनाती हैं।

कुमार (2017) ने हिंदी भाषा शिक्षण के महत्व पर बल देते हुए कहा कि भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों के मानसिक, सामाजिक एवं बौद्धिक विकास का आधार भी है। उनके अध्ययन में पाया गया कि जिन विद्यार्थियों को नियमित भाषा अभ्यास कराया जाता है, उनकी उपलब्धि अन्य विद्यार्थियों की अपेक्षा बेहतर होती है।

शर्मा, डॉ. आरती (2018) ने अपने शोध "विद्यालयी विद्यार्थियों में हिन्दी भाषा की दक्षता का मूल्यांकन" में पाया कि विद्यार्थियों की भाषिक दक्षता उनके पारिवारिक वातावरण, शिक्षक की भाषा-शैली और विद्यालय के भाषायी वातावरण पर निर्भर करती है। शोध से स्पष्ट हुआ कि यदि शिक्षण में संवादात्मक पद्धति अपनाई जाए तो विद्यार्थियों का हिन्दी ज्ञान उल्लेखनीय रूप से बढ़ता है।

नरेश कुमार (2019) (हिंदी का अंतर्राष्ट्रीय महत्व और चुनौतियाँ) आज हिंदी भारत के मात्र 10 राज्य या भारतवर्ष की ही भाषा नहीं है अपितु यह एक अंतर्राष्ट्रीय समाज और मानवीय समरसता का सम्प्रेषण करने वाली एक महत्वपूर्ण भाषा भी है । जो मानव को मानव से और देश को विदेशों से जोड़कर अपने अंतर्राष्ट्रीय सफर की ओर अग्रगामी है।

डॉ. मोनिका सिंह (2020) ने अपने शोध "माध्यमिक स्तर पर हिन्दी भाषा शिक्षण की चुनौतियाँ" में बताया कि शिक्षक प्रशिक्षण की कमी और भाषायी विविधता के कारण शिक्षण प्रक्रिया प्रभावित होती है। अध्ययन के परिणामों से यह निष्कर्ष निकला कि विद्यार्थियों की भाषा दक्षता बढ़ाने के लिए शिक्षकों को नवाचारी शिक्षण तकनीकों का प्रयोग करना चाहिए।

उपरोक्त अध्ययनों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि हिंदी भाषा दक्षता विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। विभिन्न शोधों में भाषा उपलब्धि एवं लिंग के आधार पर अंतर के मिश्रित परिणाम प्राप्त हुए हैं। अतः प्रस्तुत अध्ययन छठी कक्षा के विद्यार्थियों में हिंदी भाषा दक्षता का लैंगिक तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास है।

III. उद्देश्य (OBJECTIVES)

1. हिंदी भाषा दक्षता का अध्ययन करना।

2. बालक एवं बालिकाओं की हिंदी भाषा दक्षता की तुलना करना।

परिकल्पना (HYPOTHESIS)

H_0: बालक एवं बालिकाओं की हिंदी भाषा दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

IV. शोध विधि (METHODOLOGY)

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया। अध्ययन हेतु 200 विद्यार्थियों (100 बालक एवं 100 बालिकाएँ) का चयन किया गया। अध्ययन में हिंदी भाषा दक्षता परीक्षण का प्रयोग किया गया, जिसमें 100 अंकों की परीक्षा आयोजित की गई।

प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण माध्य, माध्यिका, बहुलक, मानक विचलन तथा t-परीक्षण द्वारा किया गया।

V. परिणाम एवं चर्चा (RESULTS AND DISCUSSION)

सारणी 1: बालक एवं बालिकाओं के अंकों का वर्णनात्मक विवरण

समूह	N	माध्य	माध्यिका	बहुलक	मानक विचलन
बालक	100	54.1	53	52	16.5
बालिकाएँ	100	55.4	55	56	14.13

परिणाम

सारणी 1 के अनुसार बालकों का माध्य अंक 54.1 तथा बालिकाओं का माध्य अंक 55.4 पाया गया। माध्यिका एवं बहुलक के मान भी दोनों समूहों में लगभग समान पाए गए। मानक विचलन के आधार पर बालकों के अंकों में अधिक विविधता (16.5) तथा बालिकाओं में अपेक्षाकृत कम विविधता (14.13) पाई गई।

सारणी 2: बालक एवं बालिकाओं की हिंदी भाषा दक्षता का तुलनात्मक विश्लेषण (t-test)

समूह	N	माध्य	मानक विचलन	t-test
बालक	100	54.1	16.5	0.55
बालिकाएँ	100	55.4	14.13	

*0.05 स्तर पर असार्थक

परिणाम

सारणी 2 के अनुसार बालकों एवं बालिकाओं के मध्य अंकों के अंतर का परीक्षण करने हेतु t-परीक्षण किया गया। प्राप्त t-मूल्य 0.55 पाया गया, जो 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।

चर्चा (Discussion)

उपरोक्त परिणामों से स्पष्ट है कि बालिकाओं का औसत अंक (55.4) बालकों (54.1) की तुलना में थोड़ा अधिक है, किंतु यह अंतर अत्यंत कम है। t-परीक्षण के आधार पर यह अंतर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नहीं पाया गया।

यह परिणाम संकेत करता है कि वर्तमान शैक्षिक वातावरण में दोनों समूहों को समान अवसर एवं संसाधन प्राप्त हो रहे हैं, जिसके कारण दोनों की उपलब्धि लगभग समान है।

सारणी 3: बालक एवं बालिकाओं के माध्य अंकों की तुलना

समूह	माध्य अंक
बालक	54.1
बालिकाए	55.4

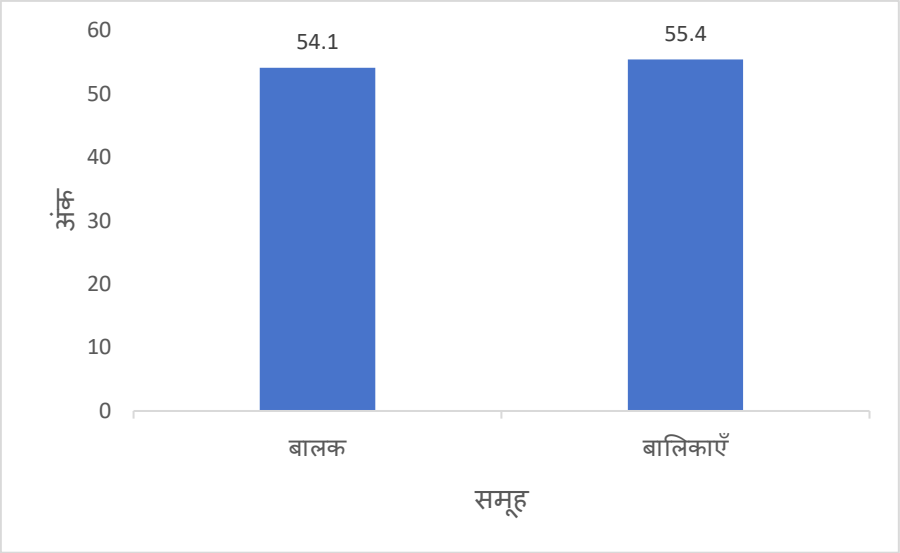

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि बालिकाओं का औसत अंक बालकों से थोड़ा अधिक है, परंतु दोनों समूहों की उपलब्धि लगभग समान मानी जा सकती है।

अध्ययन की सीमाएँ (LIMITATIONS)

1. अध्ययन का नमूना केवल 200 विद्यार्थियों तक सीमित था।

2. अध्ययन केवल एक क्षेत्र तक सीमित रहा।

3. केवल व्याकरण आधारित परीक्षा का प्रयोग किया गया।

4. अन्य प्रभावकारी कारकों (परिवार, वातावरण आदि) को शामिल नहीं किया गया।

5. विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति एवं रुचि का अध्ययन नहीं किया गया।

VI. निष्कर्ष (CONCLUSION)

प्रस्तुत अध्ययन से निष्कर्ष निकलता है कि बालक एवं बालिकाओं की हिंदी भाषा दक्षता में कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। दोनों समूहों का प्रदर्शन लगभग समान पाया गया। अतः विद्यालयों में दोनों वर्गों को समान शैक्षिक अवसर एवं संसाधन प्रदान किए जाने चाहिए।

सुझाव (SUGGESTIONS)

1. विद्यार्थियों में भाषा दक्षता बढ़ाने हेतु नियमित अभ्यास कराया जाए।

2. शिक्षण विधियों को अधिक रोचक एवं सहभागितापूर्ण बनाया जाए।

3. कमजोर विद्यार्थियों के लिए विशेष कक्षाओं का आयोजन किया जाए।

4. भाषा शिक्षण में आधुनिक तकनीकों का उपयोग बढ़ाया जाए।

संदर्भ (REFERENCES)

वर्मा, राकेश. (2016). हिंदी भाषा शिक्षण में शिक्षण विधियों का प्रभाव. नई दिल्ली: शिक्षा प्रकाशन।

कुमार. (2017). हिंदी भाषा शिक्षण का महत्व एवं विद्यार्थियों का विकास. जयपुर: हिंदी साहित्य अकादमी।

शर्मा, आरती. (2018). विद्यालयी विद्यार्थियों में हिंदी भाषा की दक्षता का मूल्यांकन. लखनऊ: शिक्षण शोध केंद्र।

कुमार, रमेश. (2019). हिंदी का अंतरराष्ट्रीय महत्व और चुनौतियाँ. वाराणसी: भारतीय भाषा संस्थान।

सिंह, मोनिका. (2020). माध्यमिक स्तर पर हिंदी भाषा शिक्षण की चुनौतियाँ. चंडीगढ़: शिक्षा विकास प्रकाशन।